शिकायती पत्र (Complaint Letter)

मँगवाये माल की क्षति होने पर शिकायत तथा क्षतिपूर्ति माँगते हुए पत्र

महिमा टेक्स्टैल

(कपड़ों का थोक व्यापारी) चेत्तला

२८-४-२०११

पत्र संख्या :सी/२-११

सेवा में

प्रबन्धक,
रामप्रकाश एण्ड सन्स,

मेटेटुपालयम,
कोयम्बत्तूर।

प्रिय महोदय,

दिनांक १२-४-२०११ के हमारे क्रयादेश के अनुसार आपका भेजा माल आज प्राप्त हुआ। लेकिन खेद के साथ हमें यह कहना पड़ता है कि माल भेजते समय आपकी ओर से थोड़ी असावधानी हो गयी है।

हमने आपसे आपसे अच्छी किस्म की रेश्मी साडियाँ ही माँगी थी, पर आपने भूल से साधारण स्तर की कोदृन साड़ियाँ ही भेज दी हैं। यह भी नहीं उनमें से कुछ पुरानी एवं फटी हुई भी है।

इन दिनों हम ग्राहकों की माँग पूरी नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें ५००००/- रुपये का नुकसान हुआ है।

इसलिए प्रार्थना है कि आप उक्त रकम की क्षतिपूर्ति करें। हम चाहते हैं कि आपसे हमारे व्यापारिक संबन्ध बने रहें।

आपका कृते,
महिमा टेक्स्टैल्स
रघुनन्दन (प्रबन्धक)

डाक अधिकारी को शिकायती पत्र

अक्षर प्रकाशन
(पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता)
१६, सुभाष मार्ग, दिल्ली-११

क्रमांक : ११४/ १२

८-३-२०१२

सेवा में

पोस्ट मास्टर महोदय,
मुख्य डाकघर,
दिल्ली-११.

प्रिय महोदय,

गत ४ फरवरी को हमने एक पार्सल रजिस्ट्री द्धारा मुख्य डाकघर से श्री नवनीत कृष्णन, कोन्नोत्त् मना, चेलामदृम, ओक्कल पोस्ट, एरनाकुलम के नाम से भिजवाया था। एक महीना बात गया है, किन्तु वह पार्सल अभी तक उन्हें नहीं मिला है। उस रजिस्ट्री की रसीद संख्या पी. १४३ है।

कृपया इस मामले में उचित कार्यवाही कर हमें सूचित करने का कष्ट करें।

आशा है आप से शीघ्र उत्तर मिलेगा।

भवदीय
किशोर श्रीवास्तव
विक्रय व्यवस्थापक

रेलवे अधिकारी को शिकायती पत्र

कृष्णन एण्ड ब्रदर्स

कांच के व्यापारी

कोषि़क्कोड

क्रमांक : १७५/१३

२४-८-२०१३

सेवा में

प्रधान व्यावसायिक मैनेजर,
प्रधान व्यावसायिक मैनेजर,
दक्षिणी रेलवे,
चेन्नै।

प्रिय महोदय,

हमने आज नेशनल ग्लास फैक्टरी, चैन्नै द्धारा भेजी पन्द्रह ग्लासों की पेटियाँ छुड़ाई हैं। ये पेटियाँ चेनै से रेलवे के रसीद नं. २१० द्धारा १९ आगस्त २०१३ को भेजी गयी थीं। पेटियों की जाँच

करने पर चार पेटियाँ टूटी हुई दिखाई पड़ीं। कोषिक्कोड रेलवे स्टेशन में रसीद पर लिखवा भी लिया है।

टूटी हुई पेटियाँ खोलने पर मालूम हुआ कि चारों में से कुल १०० काँच निकाल लिये गये हैं। ग्लास फैक्टरी से प्राप्त बीजक के अनुसार प्रत्येक पेटी में सौ- के हिसाब से काँच रखे गये थे। १०० काँचों के गायब हो जाने से हमें १५००/- रुपये की हानि हुई है। हमने पेटियाँ कोषिक्कोड के स्टेशन मास्टर के सामने ही खोली थीं। आपकी जानकारी के लिए बीजक की एक नकल और स्टेशन मास्टर के सामने ही खोली थीं। आपकी जानकारी के लिए बीजक की एक नकल और स्टेशन मास्टर का प्रमाण पत्र संलग्न कर भेज रहे हैं।

आप से निवेदन है कि उक्त बात पर आवश्यक कार्रवाई करके हमें क्षतिपूर्ति मिलने में सहायता पहुँचायें।

आपका

कृते,कृष्णन एण्ड ब्रदर्स

कृष्णन नायर

प्रबन्धक।

पुस्तक विक्रेता को शिकायती पत्र

ज्ञान मण्डल
स्टेट बैंक के सामने,
बेगम हजरत महलपार्क,
लखनऊ
२० जनवरी,१९९६

सेवा में

संचालक
वैशाली प्रकाशन,
गांध मैदान,
पटना।

महोदय,

हमारी संस्था पिछले दस वर्ष से आपके यहाँ से पुस्तकें भी कभी संख्या में कम नहीं निकलीं। परन्तु बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि आदेश संख्या २४५ के अनुसार आपने जो पुस्तकें भेजी हैं वे आपकी कीर्ति व प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं है। पुस्तकें न केवल कटी-कटी हैं अपितु संख्या में भी कम हैं। कई पुस्तकों के तो पुराने संस्करण ही भेज दिये हैं, जबकि अन्य दुकानदारों को उनके नवीन संस्करण भेजे गये हैं। इतना ही नहीं, इस बार कमीशन भी आपने कम दिया है। आपसे निवेदन है कि यदि आप हमारे साथ व्यापारिक सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं तो हमारी क्षतपूर्ति

करने का कष्ट करें। यदि आपने ऐसा न किया तो हम आपकी संस्था के साथ सम्बन्ध-विच्छेद करने की बाध्य होंगे।

भवदीय
रामकुमार
ज्ञानमण्डल प्रकाशन

बीमा संबन्धी पत्र

(Letters regarding Insurance)
जीवन बीमा की रकम माँगने का पत्र

३२/७, कोयिलांडी
२८ मार्च, २०११

सेवा में
श्री डिविषनल मैनेजर,
भारतीय जीवन बीमा निगम, कलिकट-१

विषय : पालिसी संख्या ३४२१२ श्री सुन्दरदास के जीवन पालिसी के संबन्ध में।

प्रिय महोदय,

मैंने ४ मार्च १९८६ को जीवन के संबन्ध में एक लाख (१००००)/- रुपये का बीमा करवाया था। मेरी बीमा पालिसी की संख्या १८७६१५ है। पालिसी की अवधि ४ मार्च, २०११ को पूरी हो चुकी है।

अतः विनम्र निवेदन है कि उक्त पालिसी की रकम का मुगतान जल्दी करने का प्रबन्ध करें।

भवदीय
श्री. सुन्दरदास

अग्नि-बीमा से हानि की पूर्ति के लिए पत्र

लक्ष्मी टेक्स्टैल्स (कपड़ों का थोक विक्रेता)
रौंड नोर्थ, तृश्शूर

१०-९-२०११

सेवा में

श्री मैनेजर,
भारतीय बीमा कंपनी, तृश्शूर।

विषय : अग्नि बीमा पालिसी संख्या-बी ४०६०

प्रिय महोदय,

हमें यह सूचित करने में बड़ा खेद होता है कि हमने आपसे बीमा पत्र संख्या ४०६० के अनुसार जिस टेक्स्टाइल्स का अग्नि-बीमा कराया था वह ७-९-२०११ को आग लग जाने से पूरा जल गया है। इस टेक्स्टाइल्स का अग्नि-बीमा एक वर्ष के लिए बीस हजार रुपये का कराया था आग लग जाने का कारण अभी तक अज्ञात है।

इस विपत्ति के कारण हमें १७०००/- रुपये का नुकसान हुआ है। इसलिए आप से प्रार्थना है इस रकम का भुगतान करने का प्रबन्ध करें।

आशा है, आप घटना स्थल का जाँच तुरंत करायेंगे और भुगतान शीघ्र दिलाने की कृपा करेंगे।

आपका कृते,
लक्ष्मी टेक्स्टैल्स
माधवदास
व्यवस्थापक

आवेदन पत्र (Application Letter)

लिपिक पद के लिए आवेदन पत्र

कोच्चिन,

२५-८-२०१४

प्रेषक

विनायक वेंकिटेश,
नन्दनम,
कटवन्त्रा, कोच्चिन।

सेवा में

प्रबन्धक,
जयभारत पब्लिकेशन,
कोषिकोड।

प्रिय महोदय,

२०-८-२०१४ के मलयालम मनोरमा पत्रा में आप के संस्था का विज्ञापन देखा था। विज्ञापन से मुझे मालूम हुआ कि आप के दफ्तर में लिपिक का एक पद रिक्त है। इस पद के लिए मैं अपने को योग्य समझता हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यताएँ, अनुभव आदि नीचे दिया है।

नाम - विनायक वेंकिटेश।
पता - नन्दनम, कटवन्त्रा, कोच्चिन।
जन्म तिथि- २२-८-१९९०

शैक्षणिक योग्यताएँ- बी. कॉम (प्रथम श्रेणी), केरल विश्व विद्यालय।
पी.जी.डी.सी.ए (कंप्यूटर), केरल सरकार.
एम.कॉम (पढ़ाई जारी, निजी तरफ से)

अनुभव- दो वर्ष तक स्थानीय संस्था में लिपिक के रूप में काम किया है।

मेरे आचरण, योग्यता तथा अनुभव संबन्धी प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ भी अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियों के साथ संलग्न है।

आशा है कि प्रस्तुत पद मुझे देकर आप मेरी मदद करेंगे।

संलग्न-सारे प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ

आप का विनीत
(हस्ताक्षर)
विनायक वेंकिटेश

लेखाकार के पद के लिए आवेदन पत्र-

एम.जी रोड, एरनाकुलम
१६-१०-२०१२

प्रेषक
राधा कृष्ण,
८/२४, निकुंज,
एम. जी रोड, एरनाकुलम।

सेवा में
प्रबन्धक,
बहादूर कोट्टन मिल्स,
तिरुच्चिरप्पल्लि।

प्रिय महोदय,

२७-९-२०१२ के दि हिन्दू पत्र में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपके कार्यालय में एक लेखाकार की आवश्यकता है। उक्त पद के लिए मैं प्रार्थी हूँ। मैं पच्चीस साल का युवक साल का युवक हूँ। विश्वास है कि लेखाकार का काम मैं सफलतापूर्वक निभा सकता हूँ।

मेरी शैक्षणिक योग्यताएँ-

१. बी. कॉम-प्रथम श्रेणी (कालिकट विश्वविद्यालय)
२. टाली (छह महीने का डिप्लोमा कोर्स) पास हुआ।

कंपूटर परिज्ञान

अनुभव-सन् २००९ से स्थानीय मिल में लेखाकार का काम कर रहा हूँ आशा है, इस प्रार्थना-पत्र पर अनुकूल निर्णय लेकर मुझे अनुगृहीत करेंगे। योग्यता और अनुभव संबन्धी प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ इसके साथ भेज रहा हूँ।

संलग्न- प्रमाण पत्र की प्रतिलिपियाँ-४

आपका

(हस्ताक्षर)

राधाकृष्णन

सहआचार्य के पद के लिए आवेदन-पत्र

कडुत्तुरुत्ति
१५-५-२०१४

प्रेषक
राधिका वर्मा,
आनन्द विहार,
कडुत्तुरुत्ति,
कोट्टयम।

सेवा में,
दि मैनेजर,

डी.बी, कॉलिज, तलयोलप्परम्बु।

विषय- सहआचार्य के पद लिए आवेदन पत्र

मान्य महोदय,

१०-५-१४ के मातृभूमि दैनिक पत्र में आप का विज्ञापन देखा। उससे पता चला कि आप के कॉलिज के इतिहास विभाग में सहआचार्य का पद रिक्त है। उक्त पद के लिए आवश्यक योग्यताएँ मेरे पास हैं। मेरी योग्यता एवं अनुभव निम्न लिखित है।

1. एम. ए. हिस्ट्री प्रथम श्रेणी (केरल विश्वविद्यालय)
2. एम. फिल. हिस्ट्री ए.ग्रेड. (कालिकट विश्वविद्यालय)
3. पी.एच.डी.हिस्ट्री (कालिकट विश्वविद्यालय)

अध्यापन अनुभव दो वर्ष स्वसहायता प्राप्त कॉलिज में

अब मेरी आयु २९ वर्ष है। उपर्युक्त पद पर आप मेरी नियुक्ति करें तो मैं आपकी आभारी रहूँगी। प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ इसके साथ संलग्न है।

आपकी
(हस्ताक्षर)
राधिका वर्मा

बीमा संबन्धी पत्र

(Letters regarding Insurance)
जीवन बीमा की रकम माँगने का पत्र

३२/७, कोयिलांडी
२८ मार्च, २०११

सेवा में
श्री डिविषनल मैनेजर,
भारतीय जीवन बीमा निगम, कलिकट-१

विषय : पालिसी संख्या ३४२१२ श्री सुन्दरदास के जीवन पालिसी के संबन्ध में।

प्रिय महोदय,

मैंने ४ मार्च १९८६ को जीवन के संबन्ध में एक लाख (१००००)/- रुपये का बीमा करवाया था। मेरी बीमा पालिसी की संख्या १८७६१५ है। पालिसी की अवधि ४ मार्च, २०११ को पूरी हो चुकी है।

अतः विनम्र निवेदन है कि उक्त पालिसी की रकम का मुगतान जल्दी करने का प्रबन्ध करें।

भवदीय
श्री. सुन्दरदास

अग्नि-बीमा से हानि की पूर्ति के लिए पत्र

लक्ष्मी टेक्स्टैल्स (कपड़ों का थोक विक्रेता)
रौंड नोर्थ, तृश्शूर

१०-९-२०११

सेवा में

श्री मैनेजर,
भारतीय बीमा कंपनी, तृश्शूर।

विषय : अग्नि बीमा पालिसी संख्या-बी ४०६०

प्रिय महोदय,

हमें यह सूचित करने में बड़ा खेद होता है कि हमने आपसे बीमा पत्र संख्या ४०६० के अनुसार जिस टेक्स्टाइल्स का अग्नि-बीमा कराया था वह ७-९-२०११ को आग लग जाने से पूरा जल गया है। इस टेक्स्टाइल्स का अग्नि-बीमा एक वर्ष के लिए बीस हजार रुपये का कराया था आग लग जाने का कारण अभी तक अज्ञात है।

इस विपत्ति के कारण हमें १७०००/- रुपये का नुकसान हुआ है। इसलिए आप से प्रार्थना है इस रकम का भुगतान करने का प्रबन्ध करें।

आशा है, आप घटना स्थल का जाँच तुरंत करायेंगे और भुगतान शीघ्र दिलाने की कृपा करेंगे।

आपका कृते,
लक्ष्मी टेक्स्टैल्स
माधवदास
व्यवस्थापक

क्रयादेश के पत्र (Order letter)

पुस्तकें भेजने के लिए आदेश पत्र

मार्डेन बुक स्टाल
मावूर रोड, कोषि़क्कोड

९-६-२०१५

सेवा में
सर्वश्री अमन पुस्तक प्रकाशन
कानपुर- १

पत्र संख्या : १८०/१५

प्रिय महोदय,

हमें इस अकादमिक वर्ष से लेकर हिन्दी पुस्तकों की मांग ज्यादा हो रही हैं। आपसे निवेदन है कि आप हमें निम्नलिखित पुस्तकें वा. पी. पी द्धारा भेजने की कृपा करें।

1. रामचरितमानस- तुलसीदास --------३० प्रतियाँ
2. भाषा विज्ञान- भोलानाथ तिवारी-----३५ प्रतियाँ
3. निर्मला - प्रेमचन्द----- ३५ प्रतियाँ
4. चन्द्धगुप्त (नाटक)- जयशंकर प्रसाद- ३० प्रतियाँ

पुस्तकों की पैकिंग अच्छे ढंग से करावें। आशा है कि आप २०% डिस्काउंट दे देंगे। पुस्तक और बिल प्राप्त होते ही भुगतान हो जाएगा।

आशा है, आप हमारे क्रयादेश की पूर्ति शीघ्र ही करेंगे।

भवदीय

कृते मोर्डेन बुक स्टाल

गंगाधर राव

डी. वी.डी प्लेयर के लिए क्रयादेश पत्र

सरगाम इलेक्ट्रोनिक्स
त्रिशिवपेरूर

२४-९-२०१३

पत्र संख्या : १३०/१३

सेवा में
सर्वश्री हिन्दुस्तान इलेक्ट्रोनिक्स ट्रेडर्स,
(थोक व्यापारी), नई दिल्ली-२

प्रिय महोदय,

सेवा में निवेदन है कि 'सोनी' के बीस सेट डी.वी.डी.प्लेयर शीघ्र ही भेज देने की कृपा करें।माल रेल गाड़ी से भेजें तो अधिक सुविधा होगी। पैकिंग अच्छी तरह से करा दें जिससे कि माल खराब न हो। क्रयादेश से संबन्धित बीजक रकम से नियत कमीशन काटकर शेष को बिल्टी सहित बैंक ऑफ ट्रावनकोर, त्रिशिवपेरूर द्धारा भेजने की कृपा करें।

आशा है, आप माल तुरंत भेजकर हमें कृतार्थ करेंगे.

आपका कृते,
सरगम इलेक्ट्रोनिक्स
जनार्दन

व्यवस्थापक

अनुवाद

Prepared by Dr Shiji P V

1.अनुवाद का अर्थ, परिभाषा
2. अनुवाद के प्रकार
3. अनुवाद का महत्त्व
4. अनुवाद की आवश्यकता
5. अनुवाद -प्रक्रिया (Translation process)

'अनुवाद' शब्द का प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अँग्रेजी शब्द टांसलेशन (Translation) के पर्याय के रूप में किया।इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया।

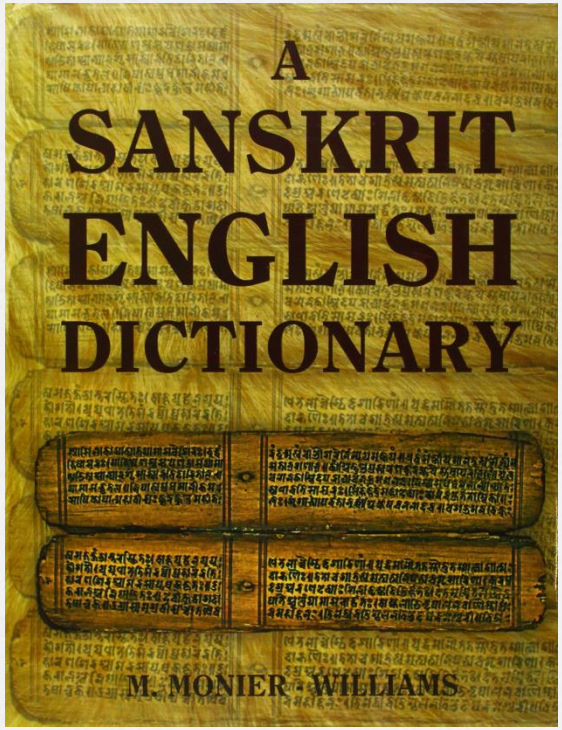
A
SANSKRIT
ENGLISH
DICTIONARY
M. MONIER - WILLIAMS

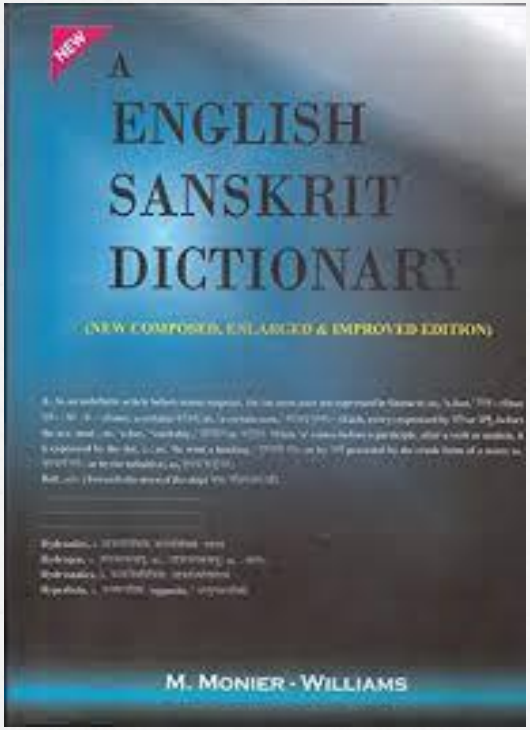
NEW
A
ENGLISH
SANSKRIT
DICTIONARY
(NEW COMPOSED, ENLARGED & IMPROVED EDITION)
M. MONIER - WILLIAMS

- संस्कृत के ’वद्‘ धातु से ’अनुवाद‘ शब्द का निर्माण हुआ है। ’वद्‘ का अर्थ है बोलना।
- ’वद्‘ धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर
  वद्+अ=वाद

इसका परिवर्तित रूप है **'वाद'** जिसका अर्थ है- **'कही हुई बात'।**
'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर
अनु+वाद= 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, **'कही हुई बात को पुनः कहना ’।**

किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन **अनुवाद (Translation)** कहलाता है।

अनुवाद के लिए 'भाषान्तर' और 'रूपान्तर' का प्रयोग भी किया जाता रहा है। लेकिन अब इन दोनों ही शब्दों के नए अर्थ और उपयोग प्रचलित हैं। 'भाषान्तर' और 'रूपान्तर' का प्रयोग अँग्रेजी के INTERPRETATION शब्द के पर्याय-स्वरूप होता है, जिसका अर्थ है दो व्यक्तियों के बीच भाषिक सम्पर्क स्थापित करना।

किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत् प्रस्तुत करना अनुवाद है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, वह मूलभाषा या स्रोतभाषा है। उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है, वह 'प्रस्तुत भाषा' या 'लक्ष्य भाषा' है। इस तरह, स्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

अनुवाद के प्रकार (Types of Translation)

गद्य-पद्य के आधार पर अनुवाद के प्रकार (Types of translations on the basis of prose-verse)

1.**गद्यानुवाद** : गद्यानुवाद सामान्यत: गद्य में किए जानेवाले अनुवाद को कहते हैं। किसी भी गद्य रचना का गद्य में ही किया जाने वाला अनुवाद गद्यानुवाद कहलाता है।

2.**पद्यानुवाद** : पद्य का पद्य में ही किया गया अनुवाद पद्यानुवाद की श्रेणी में आता है। दुनिया भर में विभिन्न भाषाओं में लिखे गए काव्यों एवं महाकाव्यों के अनुवादों की संख्या अत्यन्त विशाल है। साधारणत: पद्यानुवाद करते समय स्रोत-भाषा में व्यवहृत छन्दों का ही लक्ष्य-भाषा में व्यवहार किया जाता है।

3.**छन्दमुक्तानुवाद** : इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को स्रोत-भाषा में व्यवहार किए गए छन्दों को अपनाने की बाध्यता नहीं होती। अनुवादक विषय के अनुरूप लक्ष्य-भाषा का कोई भी छन्द चुन सकता है।

साहित्य विधा के आधार पर अनुवाद के प्रकार (Types of translation based on literary genre)

1.**काव्यानुवाद** : स्रोत-भाषा में लिखे गए काव्य का लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरण काव्यानुवाद कहलाता है।
2.**नाट्यानुवाद** : किसी भी नाट्य कृति का नाटक के रूप में ही अनुवाद करना नाट्यानुवाद कहलाता है। नाटक रंगमंचीय आवश्यकताओं एवं दर्शकों को ध्यान में रखकर लिखा जाता है। अत: इसके अनुवाद के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है
3.**कथा अनुवाद** : कथा अनुवाद के अन्तर्गत कहानियों एवं उपन्यासों के रूप में ही अनुवाद किया जाता है।
4.**अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद** : अन्य साहित्यिक विधाओं के अन्तर्गत रेखाचित्र, निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी एवं आत्मकथा आदि के अनुवाद आते हैं। पं. जवाहर लाल नेहरू की कृति 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' तथा महात्मा गांधी एवं हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथाओं के विभिन्न भाषाओं में किए गए अनुवाद इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

विषय के आधार पर अनुवाद के प्रकार (Types of translations by topic)

1.ललित साहित्यानुवाद : ललित साहित्यानुवाद के अन्तर्गत साहित्यिक विधाओं को रखा जाता है। कविता, ललित निबन्ध, कहानी, डायरी, आत्मकथा, उपन्यास आदि। इसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है।

2.धार्मिक-पौराणिक साहित्यानुवाद : जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है धार्मिक-पौराणिक साहित्यानुवाद में विभिन्न धर्मग्रंथों, गीता, भागवत, कुरआन, बाइबिल आदि का अनुवाद किया जाता है। वेद, उपनिषद आदि भी इसके साथ शामिल हैं।

3.वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री के अनुवाद : वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में विषय मुख्य है और शैली गौण। सबसे ज़रूरी बात यह कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में अनुवादक विषय का सम्यक् जानकार हो और साथ ही प्रशिक्षित भी। तभी वह अनुवाद के साथ न्याय कर पाएगा।

4.विधि का अनुवाद : इसमें एक भाषा की कानून की सामग्री को दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। कानून की किताबें, अदालत के मुकद्दमे, तत्सम्बन्धी विभिन्न आवेदन-पत्र, कानूनी संहिताएँ, नियम-अधिनियम, संशोधित अधिनियम आदि कानूनी अनुवाद के प्रमुख हिस्से हैं।

5.प्रशासनिक अनुवाद : इस अनुवाद के अन्तर्गत प्रशासन के सभी कागजात, सरकारी पत्र, परिपत्र, सूचनाएँ-अधिसूचनाएँ, नियम-अधिनियम, प्रेस विज्ञप्तियाँ आदि आते हैं। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, संसद, विभिन्न मंत्रालय आदि में द्विभाषी तथा बहुभाषी स्थिति के कारण प्रशासनिक अनुवाद के बिना काम नहीं चलता। यहाँ भी पारिभाषिक शब्दावली का सहारा लिया जाता है।

6.मानविकी एवं समाजशास्त्र का अनुवाद : इस तरह का अनुवाद अनुसंधान, सर्वेक्षण, परियोजना एवं शैक्षिक आवश्यकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है।

7..**संचार माध्यमों की सामग्री का अनुवाद :** इस अनुवाद के अन्तर्गत मुख्यत: दैनिक समाचार, सभी प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन तथा आकाशवाणी आदि क्षेत्रों की सामग्री के अनुवाद आते हैं।

अनुवाद के कुछ अन्य प्रकार (Other types of Translation)

1.शब्दानुवाद : स्रोत-भाषा के शब्द एवं शब्द क्रम को उसी प्रकार लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित करना शब्दानुवाद कहलाता है।

2.भावानुवाद : साहित्यिक कृतियों के सन्दर्भ में भावानुवाद का विशेष महत्त्व होता है। इस प्रकार के अनुवाद में मूल-भाषा के भावों, विचारों एवं सन्देशों को लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित किया जाता है।

3.छायानुवाद : अनुवाद सिद्धान्त में छाया शब्द का प्रयोग अति प्राचीन है। इसमें मूल-पाठ की अर्थ छाया को ग्रहण कर अनुवाद किया जाता है।

4.सारानुवाद : सारानुवाद का अर्थ होता है किसी भी विस्तृत विचार अथवा सामग्री का संक्षेप में अनुवाद प्रस्तुत करना। लम्बी रचनाओं, राजनैतिक भाषणों, आदि के अनुवाद के लिए सारानुवाद काफ़ी उपयोगी सिद्ध होता है।

5.व्याख्यानुवाद : व्याख्यानुवाद को भाष्यानुवाद भी कहते हैं। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक मूल सामग्री के साथ-साथ उसकी व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। व्याख्यानुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व महत्त्वपूर्ण होता है। और कई जगहों में तो अनुवादक का व्यक्तित्व एवं विचार मूल रचना पर हावी हो जाता है। बाल गंगाधर तिलक द्वारा किया गया 'गीता' का अनुवाद इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

6.आशु अनुवाद : आशु अनुवाद को वार्तानुवाद भी कहते हैं। दो भिन्न भाषाओं, भावों एवं विचारों का तात्कालिक अनुवाद आशु अनुवाद कहलाता है।

7.आदर्श अनुवाद : आदर्श अनुवाद को सटीक अनुवाद भी कहा जाता है। आदर्श अनुवाद में अनुवादक तटस्थ रहता है तथा उसके भावों एवं विचारों की छाया अनूदित सामग्री पर नहीं पड़ती। रामचरितमानस, भगवद्गीता, कुरआन आदि धार्मिक ग्रन्थों के सटीक अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

8.रूपान्तरण : आधुनिक युग में रूपान्तरण का महत्त्व बढ़ रहा है। रूपान्तरण में स्रोत-भाषा की किसी रचना का अन्य विधा(साहित्य रूप) में रूपान्तरण कर दिया जाता है।

अनुवाद का महत्त्व(Importance of Translation)

आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

भारत में अनुवाद की परम्परा पुरानी है किन्तु अनुवाद को जो महत्त्व 21वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था। सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् विश्व के अन्य देशों के साथ भारत के आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आया। राजनैतिक और आर्थिक कारणों के साथ विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी का विकास भी इस युग की प्रमुख घटना है जिसके फलस्वरूप विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों में सम्पर्क की स्थिति उभर कर सामने आयी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी के क्षेत्र में बढ़ती हुई आदान-प्रदान की अनिवार्यता ने अनुवाद एवं अनुवाद कार्य के महत्त्व को बढ़ा दिया है।

अनुवाद की आवश्यकता

आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। यदि हमें दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है तो हमें उनके यहाँ विज्ञान के क्षेत्र में, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी होनी चाहिए और यह जानकारी हमें अनुवाद के माध्यम से मिलती है। विश्व की कुछ श्रेष्ठ कृतियों को अनुवाद के कारण ही सम्मान मिला। रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' को नोबेल पुरस्कार उनके द्वारा किए गए अनुवाद कार्य पर ही मिला। शेक्सपियर, बर्नाड शा, अरस्तू, माक्र्स, गोर्की आदि जैसे विश्व के महान् साहित्यकारों एवं दर्शनशास्त्रियों को हम अनुवाद के माध्यम से ही जानते हैं।

जीवन और समाज के कुछ प्रमुख क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता

1.राष्ट्रीय एकता में अनुवाद की आवश्यकता (Need for translation in national integration)

2.संस्कृति के विकास में अनुवाद की आवश्यकता (The need for translation in the development of culture)

3.साहित्य के अध्ययन में अनुवाद की आवश्यकता (The need for translation in the study of literature)

4.व्यवसाय के रूप में अनुवाद की आवश्यकता (Translation as a business)

5.नव्यतम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता (The need for translation in the areas of latest knowledge-science)

अनुवाद -प्रक्रिया (Translation process)

अनुवाद-प्रक्रिया में निम्नलिखित तीन सोपानों का उल्लेख किया है :

1.विश्लेषण (Analysis)
2.अन्तरण (Transference)
3.पुनर्गठन (Restructuring)

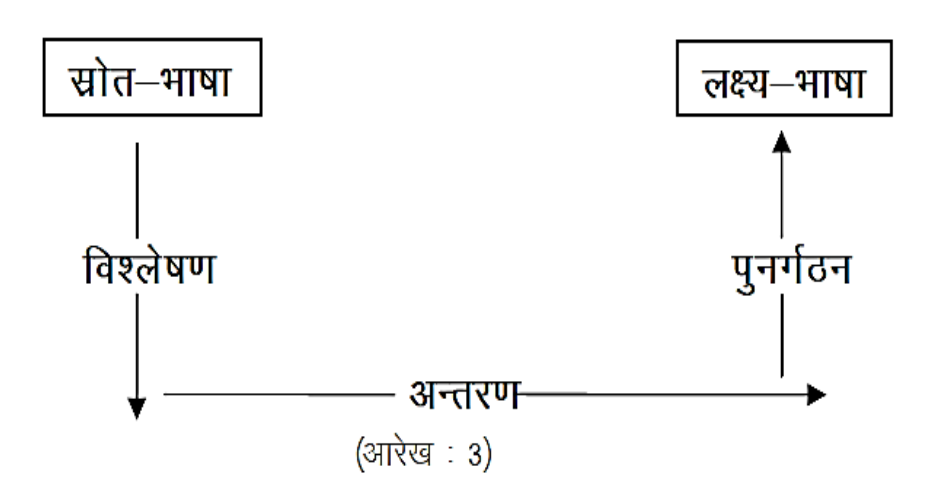

(आरेख : 3)

English to Hindi Translation

Gold is the most beautiful of all metals.It is bright and yellow in colour.It shines and sparkles when it is given a fine polish.kings used to wear crowns of gold.Gold is largely used to make coins.Gold is also used in preparing certain medicines.

सोना सबसे सुन्दर धातु है।पीले रंग का सोना बड़ा चमकीला है।चिकनाने पर वह चमाचम चमकता है।राजा सोने का मुकुट पहना करते थे।सोने के सिक्के ढाले जाते हैं।दवाएं तैयार करने में भी सोना काम आता है।

The spirit is willing, but the flesh is weak.

मन तो चाहता है पर तन साथ नहीं देता ।

The vodka is agreeable the meat has gone bad